Toppersnotes®
Unleash the topper in you

मध्य प्रदेश पटवारी

MADHYA PRADESH PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD

भाग – 3

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

मध्यप्रदेश – पटवारी

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	हिन्दी	
1.	वर्ण विचार	1
2.	वर्ण विश्लेषण	5
3.	संज्ञा	9
4.	सर्वनाम	14
5.	संधि	18
6.	समास	35
7.	क्रिया	52
8.	लिंग	65
9.	वचन	70
10.	उपसर्ग	73
11.	प्रत्यय	85
12.	रस	96
13.	अलंकार	99
14.	वर्तनी शुद्धि	103
15.	शुद्ध–वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि	107
16.	शब्द युग्म	118
17.	एकार्थी शब्द	129
18.	विलोम – शब्द	137
19.	पर्यायवाची	143
20.	वाक्य के लिए एक शब्द	150
21.	मुहावरे	156
22.	लोकोक्ति	166
23.	रचना एवं रचनाकार	179

वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना ।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से इकाई ध्वनि या वर्ण है ।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

लिपि –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है । हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विशेषताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है ।
जैसे :- क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :- 2 प्रकार
(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :- स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है । हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :- मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है ।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार
(i) ह्रस्व स्वर – जिनके उच्चारण मे एक मात्रा का समय लगता है –
अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या –4)

नोट :- (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – जिनके उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है – आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ (कुल संख्या – 7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है – स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।
जैसे :- अ३, आ३, इ३, ई३, उ३, ऊ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३,

(2) उच्चारण के आधार पर :- (2 प्रकार)
(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर आती है ।

नोट:- अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।
जैसे :- अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है ।
थबना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।
जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर :- (3 प्रकार)
(i) अग्र स्वर :- उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।
जैसे – इ, ई, ए, ऐ
(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।
आ, उ, ऊ, ओ, औ

पहचान :- निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

मध्य – अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार

(i) वृत्ताकार - उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।
जैसे :- उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार - उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर-नीचे फैलना।
जैसे - अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर - 04 प्रकार
(i) संवृत स्वर - उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना।
जैसे - इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर - उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना - ए, ओ

(iii) विवृत - उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा खुलना। जैसे - आ

(iv) अर्द्धविवृत :- उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।
जैसे - अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है।
जिनको तीन भागों में बाँटा गया है।
(i) स्पर्श व्यंजन - (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)
(ii) अतः स्थ व्यंजन - (04)
(iii) उष्म व्यंजन - (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करने के बाद मुख से बाहर निकलती है तो वह स्पर्श व्यंजन कहलाती है।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है -
(अ) 'क' वर्ग - क् ख् ग् घ् ड्.
(ब) 'च' वर्ग - च् छ् ज् झ् ञ्
(स) 'ट' वर्ग - ट् ठ् ड् ड़् ढ् ढ़् ण्
(द) 'त' वर्ग - त् थ् द् ध् न्
(य) 'प' वर्ग - प् फ् ब् भ् म्

(ii) अतः स्थ व्यंजन
जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन - 4
जैसे :- य् व् र् ल्

(iii) उष्म व्यंजन
जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह उष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल उष्म व्यंजन - 4
जैसे - श् ष् स् ह्

संयुक्त व्यंजन :- इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है।
क्ष - क् + ष
त्र - त् + र
ज्ञ - ज् + ञ
श्र - श् + र

व्यंजनों का वर्गीकरण - मुख्यतः 2 प्रकार
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर
(2) प्रयत्न के आधार पर
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर -

i. कण्ठ स्थान - 'कण्ठ्य वर्ग'
   सूत्र - अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः
   अ, आ, क वर्ग (क,ख,ग,घ,ड.) ह, विसर्ग (अः)
ii. तालु स्थान - तालव्य वर्ग
   सूत्र - इचुयशानां तालु
   इ, ई, च वर्ग (च,छ,ज,झ,ञ) य, श
iii. मूर्धा स्थान - मूर्धन्य वर्ण
   सूत्र - ऋटुरषाणां मूर्धा
   ऋ,ॠ ट वर्ग (ट,ठ,ड,ड़,ढ,ढ़,ण) र, ष
iv. दन्त स्थान - दन्त्य वर्ण
   सूत्र - लृतुलसानां दन्ता
   लृ, त वर्ग (त,थ,द,ध,न) ल, स
v. ओष्ठ स्थान - ओष्ठ्य वर्ण
   सूत्र - उपूपध्यानीया ना मो ष्ठौ
   उ, ऊ, प वर्ग (प,फ,ब,भ,म)
   उपध्मानीय वर्ण (ᳵप, ᳵफ)
vi. नासिका स्थान - नासिक्य वर्ण
   सूत्र - नासिका अनुस्वारस्य (अं)
   ञमङणनानां नासिका च
   (ङ् ञ ण न म)

vii. दन्तोष्ठ स्थान - दन्तोष्ठ्य वर्ण
सूत्र - वकारस्य दन्तोष्ठम् - व

(2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण
मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है -
(i) कंपन के आधार पर
(ii) श्वास वायु के आधार पर
(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कंपन के आधार पर - इसके आधार पर दो प्रकार के वर्ण होते है।

1) अघोष वर्ण - प्रत्येक वर्ग का पहला + दूसरा वर्ण + श,ष,स+विसर्ग
अघोष वर्ण - ट्रीक - 1,2 बजते ही उष्मा में विसर्जन का अवघोष हो जाता है। प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण, उष्म वर्ण (श,ष,स) विसर्ग

2) घोष वर्ण - प्रत्येक वर्ग का 3,4,5 वर्ण + ड, ढ + य,र,ल,व,ह + सभी स्वर + अनुस्वार
घोष वर्ण - ट्रीक - 3,4,5 की घुस लेते ही सभी स्वरों को ड ढ के साथ नियम अनुसार अंदर कर दिया।
प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण + सभी स्वर + ड ढ + अनुस्वार

(ii). श्वास वायु के आधार पर -
मुख्यतः दो प्रकार के होते है।

1) अल्पप्राण - प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा वर्ण + ड़ा, र, ल, व + सभी स्वर
अल्प प्राण - ट्रीक -उल्प आयु में 1,3,5 का अन्त हुआ व ड़ के साथ सभी स्वर्ग गये।
अल्पप्राण में आने वाले व्यंजन - प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण + अतःस्थ व्यंजन + ड सभी स्वर

2) महाप्राण - प्रत्येक वर्ग का 2,4 वर्ण + ढ + श, ष, स, ह
महाप्राण -महाम 2,4 घण्टे ढका रहने से उष्मा बढ़ती है।
महाप्राण में आने वाले वर्ण - प्रत्येक वर्ग का 2 व 4 वर्ण, + उष्म वर्ण (श,ष,स) + ह वर्ण)

(iii). उच्चारण के आधार पर -
इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है।

1) स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
2) स्पर्श संघर्षी व्यंजन (4) - च, छ, ज, झ
3) संघर्षी व्यंजन (4) - श, ष, स, ह
4) नासिक व्यंजन (5) - ङ, ञ, ण, न, म
5) उत्क्षिप्त व्यंजन (2) - ड़, ढ़
6) प्रकंपित व्यंजन (1) - र
7) पार्श्विक व्यंजन (1) - ल
8) संघर्षहीन व्यंजन (2) - य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य "वर्ण विचार" से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के निाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

समानाक्षर स्वर	संधि स्वर
(i) आ - अ + अ	ए - अ + इ
(ii) ई - इ + इ	ऐ - अ - ए
(iii) ऊ - उ + उ	औ - अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ - क़रीब
ख़ - ख़ाना
ग़ - ग़म
ज़ - ज़रा
फ़ - फ़न फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (ॉ)
जैसे - कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अंग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान "शिवप्रसाद सितारे हिंद" को जाता है।

(2) काकल वर्ण के अन्तर्गत है, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।

- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है ।
- उच्चारण स्थानों के अलावा शरीर के वे अंग जा उच्चार करनें में सहायक हो करण कहलते है । इसकी कुल संख्या चार होती है ।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ) (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है ।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है । क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोडा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है ।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें को परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खडी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खडी पाई हटा दी जाती है । उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है ।
  जैसे- विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि ।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है ।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है ।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है ।
4. ईषत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है ।
5. ईषद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (श, ष, स, ह)
6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

ध्यान दें – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ग होते है ।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें ।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड़, ढ़ + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	क़ ख़ ग़ ज़ फ़ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते है ।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्धा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते है ।

जैसे – ड़, ढ़.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड.डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है ।
  जैसे – पढ़ाई, लड़ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढ़ना आदि ।

रकार/रेफ या र संबंधि नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते है अर्थात जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है ।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात् , पुनर्जन्म, पुर्निमाण, आर्शीवाद ।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है ।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, श्रम, भ्रष्ट, श्राता

वर्ण विश्लेषण

परिभाषा – शब्द में प्रयोग की गयी ध्वनियों को अलग–अलग लिखने के कार्य को वर्ण विश्लेषण कहते है।

- हिन्दी में वर्ण दो प्रकार के होते हैं।
  (i) स्वर
  (ii) व्यंजन
- वर्ण विश्लेषण करने के लिए स्वरों की मात्राओं का ज्ञान होना बहुत जरूरी हैं।

विशेष तथ्य – शब्दों का वर्ण विश्लेषण करते समय स्वर वर्ण व व्यंजन वर्ण का विशेष ध्यान रखें।

- वर्ण विश्लेषण करते समय 'स्वर वर्ण के नीचे हल्न्त का प्रयोग नहीं किया जाता है व व्यंजन वर्ण के खडी पाई या वर्ण के नीचे हल्न्त का प्रयोग करते है।
- ध्यान देने योग्य – जैसे हम 'राम' शब्द का वर्ण विश्लेषण कर इस बिन्दू को समझनें का प्रयास करेंगे –
  राम – र् + आ + म् + अ
  राम शब्द में रा 'र्' व्यंजन के साथ व 'म' वर्ण में म् (व्यंजन) अ (स्वर) मिला है तो इनको टूकड़ो में तोड़ने पर र् + आ + म् + अ की प्राप्ति होती है यही वर्ण विश्लेषण कहलाता है।

वर्ण विश्लेषण के उदाहरण

''अ'' स्वर के उदाहरण
कमल – क् + अ + म् + अ + ल् + अ
रमन – र् + अ + म् + अ + न् + अ
हम – ह् + अ + म् + अ
कल – क् + अ + ल् + अ

''आ'' स्वर के उदाहरण
रामा – र् + आ + म् + आ
माला – म् + आ + ल् + आ
हराना – ह् + अ + र् + आ + न् + आ

''इ'' स्वर के उदाहरण
पिहर – प् + इ + ह् + अ + र् + अ
किताब – क् + इ + त् + आ + ब् + अ

''ई'' स्वर के उदाहरण
जीवन – ज् + ई + व् + अ + न् + अ
कहानी – क् + अ + ह् + आ + न् + ई
हरी – ह् + अ + र् + ई
साही – स् + आ + ह् + ई

''उ'' स्वर के उदाहरण
उपर – उ + प् + अ + र् + अ
अतुल – अ + त् + उ + ल् + अ
अनुसार – अ + न् + उ + स् + आ + र् + अ
कबुतर – क् + अ + ब् + उ + त् + अ + र् + अ

"ऊ" स्वर के उदाहरण
दूसरा – द् + ऊ + स् + अ + र् + आ
भूरा – भ् + ऊ + र् + आ
हूनर – ह् + ऊ + न् + अ + र् + अ

"ऋ" स्वर के उदाहरण
ऋषि – ऋ + ष् + इ
पितृ – प् + इ + त् + ऋ
मातृ – म् + आ + त् + ऋ
"ए" स्वर के उदाहरण
रेल – र् + ए + ल् + अ
बेकरार – ब् + ए + क् + अ + र् + आ + र् + अ
खेल – ख् + ए + ल् + अ

"ऐ" स्वर के उदाहरण
तैयार – त् + ऐ + य् + आ + र् +अ
मैदान – म् + ऐ + द् + आ + न् + अ
शैतान – श् + ऐ + त् + आ + न् + अ

"ओ" स्वर के उदाहरण
मोहर – म् + ओ + ह् + अ + र् + अ
कोबरा – क् + ओ + ब् + अ +र् + आ
कोयल – क् + ओ + य् + अ +ल् + अ
सोना – स् + ओ + न् + आ

"औ" स्वर के उदाहरण
औरत – औ + र् + अ + त् + अ
औषधि – औ + ष् + अ + ध् + इ
कौशल – क् + औ + श्+ अ +ल् + अ

संयुक्त व्यंजन के उदाहरण
उद्योग – उ + द् + य्+ ओ +ग् + अ
विद्या – व् + इ + द्+ य् +आ
न्याय – न् + य् + आ+ य् +अ
उज्जवल – उ + ज् + ज्+ व् +अ + ल् + अ

"अनुस्वार" के उदाहरण
संतोष – स् + अं + त्+ ओ +ष् + अ
नंदन – न् + अं + द्+ अ +न् + अ
वंदन – व् + अं + द्+ अ +न् + अ

"चन्द्रबिन्दु" के उदाहरण
काँस्य – क् + आँ + स्+ य् +अ
नाँद – न् + आँ + द् + अ
चाँद – च् + आँ + द् + अ
आँचल – आँ + च् + अ + ल् +अ

संयुक्त अक्षरों का विश्लेषण

क्षमा – क् + ष् + अ + म् + आ
शिक्षा – श् + इ + क् + ष् + आ
कक्षा – क् + अ + क् + ष् + आ
त्रिशुल – त् + र् + इ + श् + उ + ल् + अ
त्रिकाल – त् + र् + इ + क् + आ + ल् + अ
मित्र – म् + इ + त् + र् + अ
ज्ञानी – ज् + ञ् + आ + न् + ई
यज्ञ – य् + ज् + ञ् + अ
श्रोता – श् + र् + ओ + त् + आ
श्रेष्ठ – श् + र् + ए + ष् + ठ् + अ

"र्" के विभिन्न रूपों के उदाहरण
करम – क् + अ + र् + अ + म् + अ
कर्म – क् + अ + र् + म् + अ
क्रम – क् + र् + अ + म् + अ
कृषि – कृ + ऋ + ष् + इ

वर्ण विश्लेषण के अन्य उदाहरण

वरूण – व् + अ + र् + उ + ण् + अ
प्राथमिक – प् + र् + आ + थ् + अ + म् + इ + क् + अ
फेन – फ् + ए + न् + अ
भगवान – भ् + अ + ग् + अ + व् + आ + न् + अ
श्रमदान – श् + र् + अ + म् + अ + द् + आ + न् + अ
संतान – स् + अं + त् + आ + न् + अ
साक्ष्य – स् + आ + क् + ष् + य् + अ
यश – य् + अ + श् + अ
पत्र – प् + अ + त् + र् + अ
तितली – त् + इ + त् + अ + ल् + ई
दामोदर – द् + आ + म् + ओ + द् + अ + र् + अ
आरक्षण – आ + र् + अ + क् + ष् + अ + ण् + अ
विज्ञान – व् + इ + ज् + ञ् + अ + न् + अ
आँख – आँ + ख् + अ
अवगुण – अ + व् + अ + ग् + उ + ण् + अ
इन्तजार – इ + न् + त् + अ + ज् + आ + र् + अ
त्योहार – त् + य् + ओ + ह् + आ + र् + अ
गोरव – ग् + ओ + र् + अ + व् + अ
तोंद – त् + ओं + द् + अ
दण्डक – द् + अ + ण् + ड् + अ + क् + अ
नाटकीय – न् + आ + ट् + अ + क् + ई + य् + अ
उधार – उ + ध् + आ + र् + अ
एकाग्र – ए + क् + आ + ग् + र् + अ
ऋग्वेद – ऋ + ग् + व् + ए + द् + अ
ओंकार – ओं + क् + आ + र् + अ
कछुवा – क् + अ + छ् + उ + व् + आ

नियोजक – न् + इ + य्+ ओ +ज् + अ + क् + अ
परिपूर्ण – प् + अ + र्+ इ +प् + ऊ + र् + ण् + अ
परिभाषा – प् + अ + र्+ इ +भ् + आ + ष् + आ
कागज – क् + आ + ग्+ अ +ज् + अ
विश्राम – व् + इ + श् + र् +आ + म् + अ
आँचल – आँ + च् + अ+ ल् +अ
सफलता – स् + अ + फ्+ अ +ल् + अ + त् + आ

संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
  जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
  अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है – नाम
दूसरे शब्दों मे किसी का नाम ही उसकी संज्ञा है तथा इस नाम से उसे पहचाना जाता है।

संज्ञा के भेद –
संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

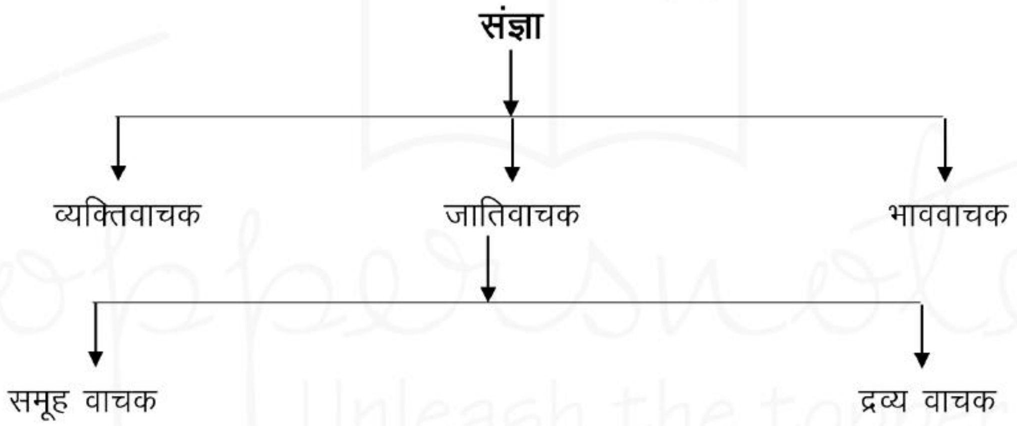

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

   जैसे – भारत, दिल्ली, चम्बल, हिमालय, दीपावली, रामायण, पश्चिम, दैनिक भास्कर, सोमवार, मार्च।

   व्यक्तिवाचक संज्ञा की पहचान का तरीका–
   व्यक्तिवाचक संज्ञा संसार में एक ही होती है। इसको हम पहले से जानने के आधार पर पहचानते है।
   जैसे – लालकिला, कुतुबमीनार, अकबर, लाल बहादुर शास्त्री, गंगा नदी, रामायण को यदि हमने पहले से देखा है, जाना है, समझा है तभी हम जान सकते है कि यह भवन तो लाल किला है, यह कुतुबमीनार की तस्वीर है, ये छवि तो लाल बहादुर शास्त्री जी की है, ये नदी तो गंगा है, यह पुस्तक रामायण है अर्थात् जिनका नाम लेते ही एकमात्र छवि अपने मानसिक पटल पर आ जाए वहीं व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

2. **जातिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं। जैसे – पुस्तक, दिन, शहर, वेद, घर, लड़का, पर्वत, झरना, आदि।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

जातिवाचक संज्ञा की पहचान

जातिवाचक संज्ञा एक वर्ग है और इसकी अनेक इकाइयाँ है, जैसे – फूल, पत्थर, पहाड़, शहर, लड़के। इनके अनेक वर्ग विद्यमान है। जातिवाचक संज्ञा की हम समान गुण के कारण पहचान करते है। पहले से उन वर्ग या गुणों का ज्ञान होने पर वैसे ही गुण अन्य व्यक्ति में पहचानकर नई वस्तु या प्राणी को हम तुरन्त पहचान लेते है। जैसे – किसी पत्थर को देखकर संगमरमर कहना, आम को देखकर लंगड़ा आम कहना, अनाज की बहुत सारी ढेरियो में गेहूँ की कल्याण सोना किस्म का नाम लेना आदि।

दूसरे शब्दों में – 'शहर' जातिवाचक संज्ञा है क्योंकि यह शब्द बहुत सारे शहरों का बोध कराता है किन्तु सरदार शहर एक विशेष शहर का नाम है, इसलिए सरदार शहर व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

समूहवाचक संज्ञाओं की पहचान व सूची

• तारों का पूँज	• अनाज का ढेर
• फूलों, अंगूरों, चाबियों का गुच्छा	• यात्रियों, टिड्डियों का दल
• पर्वतों की श्रृखला	• ऊँटों या यात्रियों का काफिला/कारवाँ
• फूलों (गुलों) का दस्ता – गुलदस्ता	• चोर, लुटेरों, अपराधियों का गिरोह
• केले का घोंद	• कवियों, लेखकों, गायकों की मण्डली
• लताओं का कुंज	• कार्यो की सूची
• भेड़ों, बकरियों का झुण्ड	• राजनीतिज्ञों का गुट
• मजदूरों, कर्मचारियों, राज्यों का संघ	• अच्छे कार्यो हेतु अच्छे व्यक्तियों का शिष्ट मण्डल

3. **भाववाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे – मधुर, कोमलता, सुंदरता, जवान, लोभ, सलाह, प्यार, क्रोध, बुढ़ापा, दास्ता, मित्रता।

- प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
    1. जातिवाचक संज्ञा से
    2. सर्वनाम से
    3. विशेषण से
    4. क्रिया से
    5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्‌वान	विद्‌वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरतर
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
खेलना	खेल
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

अपवाद

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा –** ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल, पुस्तकालय, वर्ग, टीम, समिति, आयोग, पुलिस, अधिकारी, तास, कर्मचारी, आर्केस्ट्रा, काफिला।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा –** किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – दूध, धी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, आक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।

ये भी जानें – जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में –
नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
आजाद – भारत की स्वतंत्रता में आजाद ने महत्त योगदान दिया था। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
सरदार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
गाँधीजी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है। **जैसे –**

विशेषण	**जातिवाचक संज्ञा**
गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

ये भी जाने –
- शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा।
- यहाँ शुक्ल किसी जाति का नाम ना होकर व्यक्ति (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) का बोधक है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में –

कभी–कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में होता है।
जैसे – देश को हानि जयचंदों से होती है। (यहाँ जयचंद किसी व्यक्ति का नाम न होकर विश्वासघाती व्यक्तियों की जाति का सूचक है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य में प्रयुक्त होकर अपने समान गुण/विशेषता के भाव को प्रकट करे तो वहाँ जातिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
- **शेक्सपीयर** – कालिदास को भारत का शेक्सपीयर कहा जाता है। (जातिवाचक संज्ञा)

- **बाइबिल** – रामचरितमानस हिन्दुओं की बाइबिल है।
  यहाँ बाइबिल किसी धर्म विशेष का ग्रंथ न होकर धर्म ग्रन्थों की जाति का बोधक है।

द्रव्यवाचक, समूहवाचक, भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में –

ध्यान दें – द्रव्यवाचक, समूहवाचक, भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग कभी–भी बहुवचन में नहीं होता है, क्योंकि बहुवचन में प्रयोग होने पर वे जातिवाचक संज्ञा बन जाती है।

जैसे –

- वहाँ घी बिकता है। (घी का एकवचन में प्रयोग अतः घी द्रव्यवाचक संज्ञा है।)
  वहाँ कई प्रकार के घी बिकते है। (घी का बहुवचन में प्रयोग अतः जातिवाचक संज्ञा होगी।)
- टीम मैच खेलने के लिए तैयार है। (समूह वाचक संज्ञा)
  टीमें आपसी मुकाबले के लिए तैयार है। (जातिवाचक संज्ञा)
- उसकी चोरी पकड़ी गई। (भाववाचक संज्ञा)
  उस क्षेत्र में कई चोरियाँ हुई। (जातिवाचक संज्ञा)

यदि कोई क्रियावाचक शब्द वाक्य के आरम्भ में कर्ता कारक के रूप में लिखा हो तो वहाँ उसे क्रिया ना मानकर क्रियार्थक संज्ञा शब्द माना जाता है।

जैसे –

- पढ़ना एक अच्छी आदत है।
- घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।
- दौड़ना खिलाड़ियों की दिनचर्या में शामिल है।

नोट – यदि कोई क्रियावाचक शब्द ओकारांत बहुवचन के रूप में लिखा हो तो उनको भी क्रिया शब्द नहीं मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।

जैसे – हँसतों का मत रूलाओ।
सोतों को मत जगाओ।

- ममता/एकता/समता जैसे शब्दों में मूलतः भाववाचक संज्ञा मानी जाती है, परन्तु वाक्य में प्रयुक्त होकर ये शब्द किसी स्त्री के नाम को प्रकट करें तो इनमें व्यक्तिवाचक संज्ञा होगी।
  जैसे – माँ की ममता अद्वितीय है। (भाववाचक संज्ञा)
  एकता अपने माता–पिता की इकलौती संतान है। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
  विश्वजन में एकता कायम रहे। (भाववाचक संज्ञा)
  ममता कक्षा मे होनहार छात्रा है। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरूक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – मैं, तुम, वह, हम, आप, उसका आदि।
अर्थात् – बोलने वाला या लिखने वाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे उत्तम पुरुष सर्वनाम कहलाते है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।

जैसे –

- अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।

सर्वनाम के भेद सर्वनाम के कुल 6 भेद हैं –

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम –** वह सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

पुरुषवाचक सर्वनाम

उत्तम पुरुष | मध्यम पुरुष | अन्य पुरुष

(i) **उत्तम पुरुष –** बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब, हम, लोग, मेरा, मेरी, मुझे, हमारा, हमारी, हमको।
जैसे – मैं कल ननिहाल जाऊँगा।
हम खेलने कब चलेंगे ?
हमारा राष्ट्रीय खेल हॉकी है।

(ii) **मध्यम पुरुष –** श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब, आप लोग, तेरा, तेरी, तुम्हारा।
अर्थात् – वक्ता या लेखक, सुनने वाला (श्रोता), पढ़ने वाला (पाठक) के लिए किए जाने वाले कथन हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है।
ये शब्द है – तुझे, तुम्हें, अपना, अपनी, आपकी, आपको, आपका, अपने आदि।

जैसे – तू बहुत बोलने लगा है।
तुम बाहर क्यों खेल रहे हो ?
आप लोग हमारे घर कब आ रहे हो।
आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।

(iii) **अन्य पुरुष –** बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप, इन, उन, उनको, उनसे, इन्हें, उन्हें, उसको, इससे।
अर्थात् – जिन सर्वनामों का प्रयोग लेखक या वक्ता एवं श्रोता को छोड़कर किसी अन्य के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते है।
जैसे – वह हँसते–हँसते चला गया।
उसको वहाँ नहीं जाना चाहिए था।
उनको पास बुलाकर कह देना।
आपने भारतीय संस्कृति को देश–विदेश में प्रसारित किया है।

2. **निश्चय वाचक सर्वनाम –** वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह, ये
दूर की वस्तु के लिए – वह, वे

निश्चय वाचक सर्वनाम के उदाहरण –
(i) वह उनकी पुस्तक है।
(ii) यह मेरी कलम है।
(iii) ये मेरे बड़े भाई साहब है।
(iv) श्याम का घर वह है।

नोट – निश्चय वाचक और पुरुष वाचक सर्वनाम में अन्तर –

निश्चय वाचक सर्वनाम
- ये हमारी टीम के सदस्य हैं।
- वह सोनम का बस्ता हैं।

पुरुष वाचक
- वह तेजी से जा रहा हैं।
- यह जाता हैं।

पुरुष वाचक सर्वनाम यह, वह, ये, वे, किसी व्यक्ति के बदले प्रयुक्त होते है जबकि निश्चय वाचक सर्वनाम में यह, वह, ये, वे, किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते है, इसलिए निश्चय वाचक सर्वनाम को संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते है।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम –** वह सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। वह अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – कोई, कुछ, किसी
- सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
- तुझे कोई बुला रहा है।
- दूध मे कुछ गिरा है।